माँ की ममता

(A SHORT STORY)

जगदीश कुमार परिहार

प्रकाशन वर्ष - 2020-2021

© जगदीश कुमार परिहार

मूल्य 20.₹/- मात्र

Whatsapp no. - 8905321248
telegram group -मा की ममता
email -pariharjagdish66@gmail.com

J. K. PARIHAR

लेखक - परिचय

जगदीश कुमार परिहार मूल रुप से सिरवा , जैसलमेर(राज.) के रहने वाले हैं | वर्तमान मे जय नारायण व्यास वि. वि. जोधपुर में गणित विषय में अध्ययन कर रहे है व हिन्दी मे रुचि रखते है |

" फर्क सिक इतना ही हैं कि
पेट में औलाद की लात खाकर
माँ राजी होती हैं ,
व प्रत्यक्ष जीवन में **माँ**
माँ ओलाद की लात खाकर
अपने आँसू नहीं रोक पाती हैं। "

pariharjagdish66@gmail.com
-JAGDISHKUMARPARIHAR

सभी माताओं को

मेरा कोटि- कोटि

प्रणाम

कहानी के बारे में

(माँ की ममता)

माता - पिता से ज्यादा अपनी संतान के बारे में भला कोई नहीं सोच सकता हैं | फिर भी यदि संतान माता - पिता को परिणाम के रुप में बहुत दुखद क्षण जीने के लिये देती तो यह बात उनके दिल पर तीखे रामपूरी की तरह प्रहार करती है | यह कहानी न किसी विशेष समूह (जैसे - डॉक्टर , इंजिनियर , कलेक्टर आदि

तमाम समूह) को लक्ष्य करने के लिए नहीं है जबकि यह कहानी सम्पूर्ण विश्व भर के लोगों के लिए ऐसा खराब न करने के लिए है | कहानी यही कहना चाह रही है कि अपने माता - पिता तथा सभी अपनों को खुश रखना चाहिए व खुद भी हमेशा खुश रखना चाहिए |

भूमिका

हर वर्ष लाखों प्रतिभागी उत्तीर्ण होकर अपने-अपने क्षेत्र में अच्छा कार्य करते है। कुछ लोग अपने माता-पिता को भूल जाते है तो कुछ लोग अपने माता पिता को याद रखते है तो मैं सभी से यही कहूंगा कि कुछ भी बन जाओ पर अपने माता पिता को कभी भी मत भूलना, अपने उद्‌गम को कभी मत भूलना । यदि यह किताब आपके जीवन में सफलता में सहायक सिद्‌ध होती हैं तो मेरा लिखना सफल हो जाएगा। यह छोटी कहानी युवाओं, विद्‌यार्थियों तथा सभी लोगों व विशेष रूप से अपने माँ बाप के प्यारे बेटों व बेटियों के लिए यह जरूर लाभदायक सिद्‌ध होगी|

जगदीश कुमार परिहार

(1)

एक छोटे से गांव में एक गरीब एवं आर्थिक रूप से अत्यन्त पिछड़े घर पर दुख की वर्षा हो जाती है। रमेश के पिताजी कहीं ट्रक चलाते हुए दुर्घटना के कारण मृत्यु गति को प्राप्त कर लेते है। रमेश की माँ पर दुखों का पहाड़ आकर टूट पड़ता है | रमेश की माँ रो-रोकर पागल हो रही है | उसके सास व ससुर उसे ढांढस दिलाने की कोशिश कर रहे है तथा वह खुद भी बहुत दुखी है और विलाप कर रहे हैं |

यह परिवार प्रत्येक रुप से गरीब होने के कारण न तो कोई इनके दुख में हाथ बँटाने आता है और न ही इन्हें कहीं आने जाने नहीं दिया जाता है।

(2)

काफी समय बाद रमेश की माँ उमा देवी धीरे-धीरे हिम्मत करके रमेश के लिए सोचते हुए उठती है और रमेश को खाना बनाकर खिलाती है व खुद भी थोडा बहुत खाती हैं इससे पहले रमेश की दादी कमला खाना बनाकर लाती थी। स्वभाव में तीखी होने के कारण रमेश की दादी उमा को फालतु की बातें बोलकर चली जाती थी। इस प्रकार धीरे-2 उमा आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती हैं। अब सारा बोझ उमा पर आ जाता हैं | जैसे जैसे रमेश बडा हो रहा था तो उमा को उसकी पढाई, कपड़े आदि का

सोच होने लगा । उमा गाँव के बड़े-बड़े पूंजीपत्तियो व जमींदारों के खेतों में 260₹/- प्रतिदिन की मजदूरी के हिसाब से फसल काटने के लिए जाती थी | धीरे-धीरे उमा ने पैसा इकट्ठा किया व रमेश लिए नया बस्ता स्कूल ले जाने के लिए खरीदा, फिर धीरे-धीरे नये कपडे भी खरीदे ।

(3)

गाँव के सरकारी स्कूल में पढ़ाई का स्तर निजी विद्यालय से कई गुना कम था । उमा ने हर संभव प्रयास किया व कडी मेहनत से रमेश के लिए इस वर्ष निजी विद्यालय में पढ़ने के लिए शुल्क का इंतजाम कर दिया था।

रमेश ने पिछले ही वर्ष सरकारी विद्यालय में कक्षा दसवीं 52% के साथ उत्तीर्ण की थी। इस वर्ष उमा ने

अपने बेटे रमेश का प्रवेश गाँव के निजी स्कूल में करवा दिया। निजी स्कूल में दो वर्ष का अध्ययन करते हुए रमेश ने 12 वीं में 62% के साथ कक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त किया ।

परिणाम सुनाने के दिन सभी विद्यार्थियों के माता -पिता या संरक्षक को बुलाया गया था | अधिकतर लोग कोट -सूट पहने हुए आए थे | रमेश की माँ उमा भी विद्यालय आयी । उमा जैसे तैसे व मेले कपड़ों में विद्यालय आयी व सोचकर आयी थी कि वह दूर बैठकर देखेगी व यह सोचकर आयी थी कि उसे कुर्सियों पर कौन बिठाएगा । उमा जाकर दूर बैठ गयी। कार्यक्रम शुरु हुआ व प्रधानाचार्य कार्यक्रम स्थल पर पहुँची तो यह बहुत ही अच्छे स्वभाव की थी तो उन्होंने बाबूओं से पूछा 'उमा की ओर इशारा करते हुए' वह कौन है? एक बाबू पुछकर आया व वापस आकर प्रिंसिपल मैम से कहा - वह औरत,

अपने विद्यालय में रमेश नाम का लड़का पढता है उसकी माँ है | यह सब कुछ सुनते ही प्रिंसिपल मैम ने उमा को खुद जाकर बुलाया व कुर्सी पर लाकर बिठाया । जैसे ही कार्यक्रम खत्म हुआ तो सभी अपने अपने घरों की ओर जा रहे थे तभी प्रिंसिपल मैम ने उमा से कहा लड़का पढ़ने में बहुत होशियार हैं थोडे पैसे मैं दे दूंगी इसे तैयारी करने के लिये तथा आगे की पढाई करने के लिए कोटा भेज दो वहाँ पढकर तैयारी करेगा और नीट एग्जाम पास कर लेगा और डॉक्टर बन जायेगा। यह सब बातें अपने बेटे के बारे में सुनकर खुशी के मारे माँ अपने आँसू नहीं रोक पायी

(4)

माँ ने कहीं कहीं से उधार आदि मांगकर , कुछ अपनी कमाई के पैसे मिलाकर व प्रिंसिपल मैम

द्वारा दिये पैसे मिलाकर रमेश के लिए फीस का इंतजाम किया रमेश को तैयारी के लिए कोटा भेज दिया।

माँ के संघर्ष का परिणाम आज सामने था कि रमेश को MBBS कॉलेज मिल गया था । बाबा रामदास पुरी मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर में रमेश का प्रवेश हो गया ।

(5)

कॉलेज में रमेश की मित्रता एक ऐसी लडकी से हो गयी जो सिर्फ अंग्रेजी में बात करना आदि नखरे करती थी | माँ की उम्र अभी 46 वर्ष ही हुई थी फिर की आँखें अंदर से ओर धँस गयी थी ,चेहरे पर

झुर्रियाँ पड़ गयी थी । अब माँ देख भी नहीं पाती सकती थी । उम्र भी इतनी ज्यादा नहीं हई थी कि यह सब हो जाए परन्तु कई दुखों के कारण, विकट परिस्थितियों के कारण माँ के 90 साल वाले हालात केवल 46 वर्ष मात्र की उम्र में हो गये थे| रमेश को घर आए एक वर्ष हो गया था माँ ने विद्यालय जाकर प्रिंसिपल मैम से रमेश को फोन लगवाया तो रमेश का फोन अन्य कॉल पर व्यस्त था। इधर रमेश लुईस कार्टिना से बात कर रहा था जो इसी वर्ष रमेश की मित्र बनी थी तभी रमेश ने कहा "मे बी माय मदर इज कॉलिंग" अर्थात् मेरी माताजी का फोन आ रहा है तो कार्टिना ने कहा-" हू इज दिस ट्रेश" अर्थात् यह कचरा कौन हैं। इस व्यंग्य पर रमेश म कुछ कहने की बजाय हंसने की छोटी सी प्रक्रिया दी व फोन रख दिया, रमेश ने माँ का फोन उठाया। माँ थोडे दिनों बाद ही रमेश से बात कर रही थी

फिर भी माँ को यह समय कई वर्षों जितना लग रहा था । माँ अपने आँखों से आंसू रोक नहीं पायी व रमेश की आवाज सुनकर अत्यन्त भावुक हो गई। फिर रमेश ने कहा - हेल्लो माँ

माँ ने रोती हुई आवाज में कहा – “कैसे है बेटा ?”

रमेश ने कहा - “ठीक हुँ माँ |”

रोती हुई आवाज मे माँ ने कहा – “कब आ रहा है बेटा?"

रमेश ने कहा- "अभी क्या काम हैं घर पर , क्या करूंगा आकर|”

(6)

कहते है कि जब विनाश काल आ जाता है तब बुद्धि विपरीत हो जाती है अर्थात् दिमाग सही ढंग से काम नहीं करता है | उसी प्रकार रमेश भी भूल

चुका है उस स्थिति को जो कि जीवन के यथार्थ से परिचय करवा देती हैं | अब रमेश उस शांत और शीतल वातावरण से बाहर आ गया है अर्थात् उस वातावरण को भूल चुका है व अब तड़क - भड़क वाली दुनिया में आ गया है |

इसी प्रकार जिंदगी में पता भी नहीं चलता है कि कब बुद्धि विपरीत दिशा में गति करना शुरू हो गयी | जब बुद्धि विपरीत दिशा में चलती है तो परिणाम नकारात्मक एवं हानिकारक ही होता है |

कॉलेज में धीरे धीरे रमेश को बहला फुसला कर कार्टिना रमेश से शादी कर लेती हैं । एम बी बी एस के पाँच साल पूरे होने के बाद रमेश व कार्टिना गांव जाते हैं तो माँ खुश भी होती है साथ ही माँ को समाज के कुछ ताने भी सुनने पड़ते हैं कि

'कहाँ से चुडैल लाया है तेरा बेटा ? फिर भी उसका घर गरीब व अलग ही था इसलिए इतना ज्यादा कुछ जैसे पंचों द्वारा पंचायती करना आदि नहीं होता है।

अब माँ को कुछ दिखता भी नहीं था | एक दिन रमेश जमीन के कागजात लाया व माँ का अँगूठा लगवाया व जमीन अपने नाम करवा दी।

कुछ दिन रहने के बाद कार्टिना माँ को गालियाँ देना **शुरू** कर देती हैं कि कहीं भी पड़ी रहती है यह भूतनी हर समय , बिल्कुल ही असभ्य इन्सान है , पता नहीं कब मरेगी | मूर्ख रमेश यह सब सिर्फ सुनता रहता है।

एक दिन कार्टिना अपने कमरे में सिगरेट पी रही थी तो आँगन में टूटी चारपाई पर बैठी बुढ़ी माँ कहती है कि बेटा यह मत पिया कर बहुत दुर्गंध आती इसकी और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी होती हैं | तभी रमेश के घर पर न होने का मौका देखकर कार्टिना को चारपाई से नीचे गिरा देती हैं| कार्टिना माँ को 50-60 गालियां अंग्रेजी में फेंक देती है व हर समय , हर रोज माँ से अड़ी रहती हैं व माँ को परेशान करती रहती है |

एक दिन कार्टिना रमेश को बहला फुसलाकर मना लेती हैं व दोनों लंदन-चले जाते हैं । जाते समय रमेश जमीन व घर भी बेच देता है व माँ को वृद्धाश्रम में छोड़कर चला जाता है | बेटे की यह

स्थिति देखकर माँ कई दिनों तक न कुछ खाती है न कुछ पीती है अर्थात् पानी तक भी नहीं पीती है व रोती रहती है | एक दिन वृद्धा आश्रम में ही मर जाती है |

“फना कर दो अपनी सारी जिन्दगी अपनी माँ के कदमों में दोस्तों,

दुनिया में यही एक मोहब्बत है जिस में बेवफाई नहीं मिलती!”

“हजारों फूल चाहिए एक माला बनाने के लिए, हजारों दीपक चाहिए एक आरती सजाने के लिए, हजारों बून्दे चाहिए समुद्र बनाने के लिए, पर माँ अकेली ही काफी है, बच्चों की जिन्दगी को स्वर्ग बनाने के लिए!”